Addressing the audience on the day of Convocation

To……

I begin today by congratulating all those bright students who shall be graduating today in different faculties. This is a golden moment which shall bring pride to their lives forever. I congratulate their parents, teachers and friends who joined the pursuit of success of these students. Today you are forwarding your march of life. Convocation is an important ceremony. It treads you with responsibility. A sense of duty shall guide you here after.

स्व स्व कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।

- Gita, 45.18

There are few universities which impart education to this magnanimous number of students and in these many faculties. This increases the sense of responsibility for the faculties, students, and society. Of late it is seen that we are easily impressed upon by the West. The idea of development is pretty western. There's nothing wrong. But we must understand the fabric of our society and its demands.

Our value system is different from that of the West while sophists believe in good and bad, right and wrong are part of objective nature of things, the Indian philosophy deliberately avoids a discussion on study of values.

We frequently hear about the need for introduction of value education in our curricula. We hear about the degeneration of values in every spheres of life. We are also hearing about the clash of values. But tell me are we sure about what is value? In my view 'Dharma-paalan' is ultimate value. The Prithvi Sukta of the Atharvaveda speaks about this diversity:

> "Let this earth, where people of different faiths live
> peacefully like a family, give happiness to all of his."

World may change from top to bottom but core values shall never change. They are honesty, truthfulness, respect of self and others, hard-work, personal integrity and community involvement.

We know there are 10 lakshanas of Dharma:

धृति क्षमा दमोस्तेयं, शौचं इन्द्रियनिग्रहः ।

धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो, दसकं धर्म लक्षणम ॥

These never get outdated. Today its your duty that these core values are not defeated. Its my concern and worry that our education system must not fail our youth in life. That each youth who passes out is comfortably settles down in life. That test of life doesn't fail my youth in the test of knowledge. But the efforts are needed in holistic format. The education must be reflected in day to day life. Its our utmost duty to respect the

rules and orders of the country. We must keep the surroundings clean not because government says, but because we must. We should be honest not because dishonesty is a crime, but because we have no other choice, we must be proud of our culture and traditions, not because it's the only way to be a nationalist, but because we are patriotic so we love our country.

It may seem that convocation ceremony becomes only a preaching ceremony. Its not like that. Along with education what we need is SAMYAK GYAN and SAMYAK BUDDHI. There are a number of poets who were the seers. Narsinh Mehta, Kalapi, Meghani, Umashankar Joshi and K M Munshi , Aurobindo Ghosh, Swami Dayanand Saraswati have been the pioneer of understanding the Gujarati Manas. Today they belong to the world. Any one of you can become one of these seers. Any one of you can become like Mahatma Gandhi, sardar Patel, Anandshankar Dhruv, Dhirubhai Ambani, like Vikram Sarabhai, like Dr Kasturi Rangan, Like Justice Ahmadi, like Kalyanji Anandji, like Irfan Pathan and Anoop Jalota or Pankaj Udhas.

Gujarat University has given very noticeable alumni, including our Hon Prime Minister Shri Narendrabhai Modi.

Today you are known by Gujarat University, tomorrow Gujarat University shall be known by you. That should be your efforts. When we cease, you begin.

'यत् काममम् तत् सम्पादयत् ।' You will get what you conceive.

Don’t fail your own dreams, don’t doubt your caliber, don’t feel endangered by difficulties, don’t loose trust, never be defeated. May you shine with time. All that comes from ‘Tana’ (तन) is ‘Trantra’ all that comes from ‘Mana’ (मन) is ‘Mantra’ and the right mixing of this तन्त्र & मन्त्र leads to the state of मन्त्रमय, ज्योतिर्मय and आनन्दमय (Mantra-maya, jyotir-maya and aanand-maya). That is the goal of life: चरैव - चरैव (Charaiv-Charaiv) should be the motto – make this world happy – make your life happy and keep your smile intact.

तू शाहीन है परवाज़ है काम तेरा

तेरे सामने आसमान और भी हैं

हिंदी उद्‌बोधन

सबसे पहले तो उन सभी शिक्षार्थियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं जो आज के दीक्षान्त समारोह से दीक्षा ग्रहण कर के अपनी विद्‌या यात्रा की समाप्ति तक सफतापूर्वक आ पहुंचे हैं. मैं समझता हूँ की यह यात्रा सरल नहीं रही होगी. इसीलिए आज के इस क्षण को आप ताउम्र याद रखेंगे आप के साथ साथ आपके माता पिता, शिक्षक और वे सभी जिन्होंने आपके यहाँ तक आने में सहयोग दिया, उन सभी मेरी हार्दिक बधाई.

आज के बाद आप उन नागरिकों की श्रेणीमें आ जायेंगे जिन्हें समाज पढ़े लिखे जिम्मेदार नागरिकों की नज़र से देखता है. दीक्षान्त समारोह उस कड़ी में एक महत्वपूर्ण अवसर है. आज के बाद आप सब अपनी रूचि और अवसर अनुसार अपनी जीविकार्जन में लग जायेंगे.

स्व स्व कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।

- Gita, 45.18

ऐसे कम ही विश्वविद्यालय हैं जो इतने वृहत्त रूप से इतने सारे विद्यार्थियों को एक साथ दीक्षा दें. यह संख्या हमें भयभीत भी कर सकती है और गर्वान्वित भी. परन्तु जब में आपकी ओर देखता हूँ तो आश्वस्त हो जाता हूँ. क्यूंकि मुझे विश्वास है की आपको अपनी संस्कृति और समाज की समझ है.

हम सभी को आगे बढ़ना अच्छा लगता है. परन्तु विकास के नाम पर अंधाधुंध अनुकरण करना ठीक नहीं है. हमें समझना होगा कि पश्चिम हर बात को स्वाभाविक रूप से अच्छे या बुरे दो भागों में विभाजित करता हैं . हम आत्मा की विकास की बात करते हैं अतः हमारे यहाँ बुरे को अच्छाई में बदलने का अवसर दिया जाता है.

हम अक्सर जीवन में गिरते मूल्यों की बात करते हैं. यह भी कहा जाता है की हमारे स्कूल और कॉलेज में अनिवार्य रूप से मूल्य निर्देशित शिक्षा का प्रावधान होना चाहिए. परन्तु जीवन का क्या मूल्य है? मेरी समझ में जीवन का मूल्य है

सहना भवतु, सहनो भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै

मेरा मानना है कि अच्छे मूल्य कभी भी हराए नहीं जा सकते. ईमानदारी, सच्चाई, दूसरों का आदर, कठिन परिश्रम, स्वयं की विश्वसनीयता, और सबकी भलाई ऐसे मूल्य हैं जो हमें हर जगह चाहिए. तो इनके निभाने की शुरुवात भी हमें ही करनी होगी.

हमारे यहाँ धर्म के १० लक्षण बताये गए हैं:

धृति क्षमा दमोस्तेयं, शौचं इन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो, दसकं धर्म लक्षणम ॥

यह हमारी ज़िम्मेदारी है की धर्म के ये लक्षण कभी न थकें. शायद आपको लगता होगा की दीक्षान्त समारोह सिर्फ भाषण देने का अवसर हो जाता है. क्या सीखने के लिए मात्र कक्षा ही होती है? क्या हम महापुरुषों से सीख सकते है? क्या नरसिंह मेहता, कलापी, के एम् मुंशी, अरबिन्दो घोष, स्वामी दयानंद सरस्वती हमारे आचार विचार का अंग बन सकते है? क्या वे लोग जिनके उदाहरण सुन कर हम बड़े हुए, हम स्वयं बन सकते है? क्या हम स्वयं गाँधी, सरदार पटेल, अनद शंकर ध्रुव, धीरुभाई अम्बानी, डॉ कस्तूरी रंगन, विक्रम साराभाई, कल्याण

जी आनंद जी, अनूप जलोटा, जस्टिस अहमदी,इरफ़ान पठान, रविन्द्र जडेजा या पंकज उधास बन सकते हैं? वही हमारे शिक्षा और शिक्षित होने के सही लक्षण होंगे.

क्या हमारी शिक्षा ने हमें यह आत्मविश्वास दिया है? कुछ प्रश्न हैं. हम भारतीय हैं इसलिए हमें हमारी संस्कृति पर गर्व है या विदेशी इसे महान कहते हैं इसलिए?

हमें सफाई पसंद है इसलिए सफाई रखनी चाहिए या सरकार कहती है इसलिए ? चौराहों पर लगी बत्तियों का प्रयोग अपने लिए करना चैहिये या ट्रैफिक पुलिस के लिए?

आपके इन अत्यंत छहोटे छहोटे प्रयासों से ही यह विश्वविद्यालय बना है. कुछ लोगों ने इनका अत्यंत निष्ठां से पालन किया है इसीलिए आप गुजरात यूनिवर्सिटी में पढने का गर्व रखते हैं.

इस यूनिवर्सिटी से अनेको हस्तियाँ निकली हैं. अपने प्रधान मंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्रभाई मोदी भी इसी गुजरात यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी रहे हैं. आज आप इस यूनिवर्सिटी से जाने जाते हैं, कल यह यूनिवर्सिटी आपके नाम से जानी जाएगी.

अपने सपनो को, अपने प्रयत्नों को, अपने लक्ष्यों को और अपनी मेहनत को कभी संशय की नज़र से न देखें. वह सब जो मन से आता है मंत्र कहलाता है, और जो तन से आता है तंत्र कहलाता है. तंत्र और मंत्र से ही मंत्रमय, ज्योतिर्मय और आनंदमय जीवन की यात्रा का आरम्भ होता है. जीवन का सिद्धांत है: चरैव , चरैव . आपको आज नए पंख मिले हैं: आसमान बहुत बड़ा, बहुत विशाल है:

तू शाहीन है परवाज़ है काम तेरा

तेरे सामने आसमान और भी हैं